फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 211 जनवरी 2006

कहत कबीर

रिश्तों में निर्भरता और आत्म-निर्भरता (स्वतन्त्रता) दो छोर हैं, सतही हैं। सम्बन्धों में परस्पर निर्भरता में गहराई सम्भव है।

समझाना बनाम समुदाय-रूपी तालमेल (2)

✱ हम मानवों ने विश्व-व्यापी जटिल ताने-बाने बुन लिये हैं। जाने-अनजाने में हमारे द्वारा निर्मित हावी ताने-बाने हम मानवों के ही नियन्त्रण से बाहर हो गये हैं। हावी ताने-बाने वर्तमान समाज व्यवस्था का गठन करते हैं। ✱ जटिल और विश्व-व्यापी होने के बावजूद यह ताने-बाने स्थिर नहीं हैं, जड़ अथवा ठहरे हुये नहीं हैं बल्कि गतिमान हैं। हर पल, हर क्षण चीजें बदल रही हैं। ✱ हावी तानों-बानों का योग, वर्तमान समाज व्यवस्था हम मानवों पर तो हिमालयी आकार का बोझ बन ही गई है, पृथ्वी की प्रकृति को भी यह व्यवस्था तहस-नहस करने में लगी है। ✱ ज्ञानी-ध्यानी-बलशाली-बलिदानी-अवतारी मनुष्यों के प्रयास जाने-अनजाने में हालात को बद से बदतर बनाते, असहनीय वर्तमान तक ले आये हैं। धार्मिक-आर्थिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक पंथ-सम्प्रदाय वर्तमान समाज व्यवस्था से पार पाने में अक्षम लगते हैं। ✱ गतिशील व विश्व-व्यापी दमन-शोषण वाली इस व्यवस्था से पार पाने और नई समाज रचना की क्षमता संसार में निवास कर रहे पाँच-छह अरब लोगों में लगती है। इस क्षमता को योग्यता में बदलने के लिये सामान्यजन की सहज गतिविधियों के महत्व को पहचानना-स्थापित करना प्रस्थान-बिन्दु लगता है। ✱ ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं की हावी भाषा की जगह नई भाषा की आवश्यकता है जिसके लिये विगत के समुदाय कुछ सामग्री प्रदान कर सकते हैं।

● माता-पिता, बड़े भाई-बहन, नाते-रिश्तेदार, पड़ोसी, अध्यापक-अध्यापिकायें, ज्ञानी-ध्यानी-विशेषज्ञ, कम्पनियाँ-सरकारें समझाते रहे हैं, समझा रहे हैं। मण्डी-मुद्रा के दबदबे में तो समझाने ने महामारी का रूप ले लिया है।

– क्या समझाया जा रहा है? सारतः यह कि सिर-माथों से बने-बनते विभिन्न आकार-प्रकार के पिरामिडों में अपने-अपने स्तर को लोग बनाये रखें और-अथवा अन्य को नीचे धकेलें तथा अपने ऊपर चढें। पिरामिडों के योग से बनती ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में सफल जीवन का पैमाना है परिवार-बस्ती-क्षेत्र-संस्थान-विषय-.....में ऊँच-नीच की सीढी के डंके चढना।

–और, पीढी-दर-पीढी समझाने वालों का समवेत स्वर में प्रलाप है : लोग समझते ही नहीं!

– प्रत्येक में गहरे-दीर्घ-घनिष्ठ-व्यापक सम्बन्धों के लिये तड़प है। हर एक के अन्तर्मन में कहीं छुपी लगती है समुदाय की चाह। ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के पाँच हजार वर्ष के अस्तित्व के दौरान विगत के समुदाय-जनित आचार-विचार के लिये टीस बनी ही रही है। हूक प्रकट होती है नित नये सिरे से समुदाय-रूपी गठन व आचार-विचार के प्रयासों में जो कि खुरदरे/आंशिक रूपों में ही सही पर व्यापक स्तर पर देखने को मिलते हैं। इस सन्दर्भ में ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के डर, लालच और पुर्जेनुमा जोड़ों-तालमेलों के स्थान पर समुदाय-रूपी जोड़ों-तालमेलों के आचार-विचार पर चर्चायें बढाने की बात है।

● मानव योनि के भी स्वभाव में है लोगों द्वारा जोड़ बना कर रहना, आपस में तालमेल रखना। अकेलेपन से ज्यादा पीड़ा शायद ही कोई हो। और, वर्तमान की एक त्रासदी यह भी है कि भीड़ में भी प्रत्येक अकेला-अकेली महसूस करे। जीवन जीने की बजाय जिन्दगी काटने की बढती मनोदशा इसका लक्षण है।

– हमारे स्वाभाविक जोड़ों की जीवन्तता, हमारे समुदाय-रूपी तालमेलों की ऊर्जा और इन्हें तोड़ने-समाप्त करने, इनके स्थान पर डर-लालच-पुर्जेनुमा बन्धन स्थापित करने के बीच चलते द्वन्द्व के लिये एक सामान्य उदाहरण के तौर पर विद्यालयों में बच्चों को बैठाने के ढँग की सरल-सी लगती बात को ले सकते हैं।

इच्छा अथवा अनिच्छा किसी भी अखाड़े के चरित्र को गड़बड़ाने की क्षमता रखती है पर इस से अखाड़ा-निर्माण की मन्शा पर विवाद अवांछनीय लगता है। स्कूलों में बच्चों को बैठाने की योजनायें एक अखाड़े का निर्माण करती हैं। पंक्ति-कतार-लाइन का, क्रमवार का मकसद होता है कि बच्चे आपस में बातें नहीं करें, अध्यापक जो कहे उसे सुनें। अनुशासन को, व्यवस्था को जो गड़बड़ाये उसे शरारत कहा जाता है। बच्चों की ही नहीं बल्कि बड़ों की भी शरारतें रोकने, शरारतों की सम्भावनायें कम करने के लिये विद्वान लोग बहुत माथा-पच्ची करते हैं – पंक्ति उनका एक धारदार आविष्कार है। मदरसों में बैठना सिखाया जाता है, पंक्ति में बैठना सिखाया जाता है। इस बैठना सिखाने का अर्थ है बच्चों को डर, लालच और पुर्जेनुमा जोड़ों-तालमेलों के साँचों में ढालना।

स्वाभाविक आदान-प्रदानों और तालमेलों पर रोक मन में आक्रोश को जमा करती है। गुस्सा फूटता है छुट्टी की घण्टी पर, जेल से छुट्टी! बच्चों का हर्षोल्लास-कोलाहल-'शोर' आक्रोश की अभिव्यक्ति के संग-संग स्वाभाविक आदान-प्रदानों की बाढ होती है, समुदाय-रूपी जोड़ों-तालमेलों का सैलाब होता है।

भाग्यशाली हैं वो बच्चे जो घर से विद्यालय की आधा-पौन घण्टा पैदल दूरी को दो-तीन घण्टों में तय करते हैं। बसों वाले बच्चे ड्राइवर-कण्डक्टर भइया के उलाहनों की परवाह न कर बैठने के पुर्जेनुमा जोड़ वाले अनुशासन को स्कूल से लौटते समय अक्सर तोड़ लेते हैं – तरतीब से बैठने की बजाय सीट पर घुटनों के बल खड़े हो कर पीछे मुड़ आदान-प्रदान करते बच्चों की ऊर्जा समुदाय-रूपी तालमेलों की लौ को जलाये रखती है। बहुत अभागे हैं वे बच्चे जिन्हें कार से स्कूल आना-जाना पड़ता है – आधे घण्टे की पैदल दूरी को तीन-चार मिनट में निपटाते यह बेचारे उस स्वाद से अनभिज्ञ ही रहते हैं जो आधे घण्टे की दूरी को दो घण्टे में तय करने में है..... सुस्वाद जो फुरसत वाले बच्चों की टोली के अनेकानेक समुदाय-रूपी जोड़ों-तालमेलों में है। स्कूल तथा स्कूल के बाद भोजन-टी वी-ट्युशन और फिर युद्ध-रूपी खेलों के लिये सटीक समय निश्चित करने से ज्यादा बुरा कोई बच्चों के लिये क्या कर सकता-सकती है? (जारी) ■ ■ ■

एक डायरेक्टर ने एक फैक्ट्री में मैनेजरों से कहा : "यह कुर्सी-मेज शोभा के लिये हैं, बैठने के लिये नहीं। आगे से अगर रिजेक्शन होगा तो भगा दिये जाओगे।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद-121001

खतों-पत्रों से

★...... फिरोजाबाद काँच व चूड़ी उद्योग के लिये विश्वविख्यात है। काँच उद्योग को अब चीन के सामानों ने कड़ी टक्कर दे दी है। बाजार चीन के सामानों से पट गये हैं, यहाँ का काँच उद्योग पिट रहा है। चूड़ी व्यवसाय कुटीर उद्योग के रूप में चलता है। लगभग 125 श्रमिकों का हाथ लगने के उपरान्त चूड़ी पहनने योग्य बनती है। चूड़ी एक कारखाने में बनती है फिर कहीं झलाई होती है, कहीं पकाई, कहीं कटाई, कहीं हिल्ल लगती है। इन सभी स्थानों पर ठेकेदार काम कराते हैं। चूड़ी के 20 दर्जन जोड़ों के हिसाब से मजदूरों को मजदूरी मिलती है। चूड़ी पर जरी लपेटने का काम अधिकांशतः घरों पर महिलायें करती हैं। महिलायें मोरी काटने का काम भी कर लेती हैं। चूड़ी का काम पूरी साल नहीं चलता। अधिकांश मजदूर ग्रामीण क्षेत्र से आते हैं। ये मजदूर 20-20 किलो मीटर दूर के गाँवों से नित्य प्रातः काल साइकिलों पर आते हैं। शाम को कार्य समाप्त कर वापिस चले जाते हैं।

अधिकांश मजदूर अस्थाई हैं। मजदूर हित का नारा दे कर एक सज्जन पहले तीन बार एम. एल.ए. बन गये। फिर उनका कत्ल हो गया। अब एक नया माफिया मजदूर हित का नारा लगा रहा है। मजदूरों से सुरक्षा के नाम पर लाखों रुपया इकट्ठा कर लेता है और कारखानेदारों से भी चौथ वसूल कर लेता है। मजदूरों को न प्रोविडेन्ट फण्ड मिलता है, न दुर्घटना होने पर कम्पन्सेशन। सब भगवान और भाग्य भरोसे है।

हाँ, नगर की आबादी दिन में 9 लाख होती है और रात में 6 लाख – 3 लाख मजदूर शाम को वापिस घर लौट जाते हैं।..... बहुत पहले सरकार ने एक श्रमिक कॉलोनी बनाई थी परन्तु अब उसमें सब सफेदपोश रहते हैं।.....

– रामसनेहीलाल, फिरोजाबाद

★.....कभी-कभी जब अपने कक्ष में अकेला होता हूँ, आपके पन्नों से निकल कर कुछ श्रमिक मेरे आसपास आ कर बैठ जाते हैं। उनके चेहरे देख कर मैं सोचने लग जाता हूँ कि क्या कोई ऐसा रास्ता नहीं हो सकता जिस पर चल कर हम श्रम की कद्र कर सकें। आखिर कब तक मजदूर और व्यवसायी के बीच घोड़े और घास का संबंध बना रहेगा? मुझे लगता है कि हमारे अर्थशास्त्रियों ने उत्पादन के कारकों के रूप में भूमि, श्रम व पूँजी (Land, Labour, Capital) की जो बुनियादी संकल्पना कर ली है उसी में कहीं कोई कमी है। परेशानी यह है कि इन तीनों की फितरत और सिफत बिलकुल अलग-अलग है। भूमि बोल नहीं सकती, पूँजी चुप नहीं रह सकती और श्रम को बोलने पर सजा तथा चुप रहने पर दुर्दशा का शाप मिला हुआ है।...

– प्रबोध कुमार, वनस्थली विद्यापीठ

★ जो सौ चूहा खाए बिल्ली
नाचे-गाए जाए दिल्ली।

– अक्षय कुमार, भागलपुर

★..... मजदूर भाइयों की कथा-व्यथा पढ़ कर मन आक्रोशित होने पर विवश हो जाता है।. पता नहीं सरकार किस विकसित भारत की बात कर रही है।....

– राहुल, महमूदाबाद

★...... कमजोर का शोषण हर युग में होता रहा है.... वर्तमान समय में यह शोषण पराकाष्ठा पर है.... यहाँ कानून-व्यवस्था पहुँचवाले अमीरों, राजनीतिज्ञों के लिये है, उनकी सुरक्षा के लिये है। अर्थव्यवस्था का संचालन भी उन्हीं के द्वारा उन्हीं के लिये हो रहा है।

मजदूरों के इस शोषण के विरूद्ध..... यदि किसी ने प्रयास किया भी तो वह भी प्रबन्ध तंत्र द्वारा खरीद लिया जाता है।..... इस देश में चहुतरफा अन्याय, जुल्म पनप रहा है क्योंकि यहाँ हर व्यक्ति, हर क्षेत्र में केवल अपने हितों को देख रहा है, पूर्णतः संवेदनहीन हो चुका है। न्यायपालिका सत्ताधीन है... इसलिये न्यायपालिका मजदूरों, गरीबों के लिये मर सी चुकी है जो अपने निर्णय में बीस-बीस वर्ष लगा देती है, और निर्णय में खून चूस वकीलों को विद्वान अधिवक्ता सम्बोधित करती है, और वकील उन्हें न्यायमूर्ति सम्बोधित करते हैं। यह कानूनी नौटंकी वर्षों से अनुभव की जा रही है.... संसद.. ... जहाँ जन प्रतिनिधि के रूप में चोर-उचक्के, हत्यारे, भ्रष्ट लोग बैठे हैं।..... जब तक इस व्यवस्था को बदलने के लिये गरीब, मजदूर, किसान, मध्यम-वर्गीय, तृतीय श्रेणी, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी अपनी एक जाति-धर्म (जन्म से मिली जाति, धर्म से अलग) हो कर नहीं उठेंगे... .. शोषण का यह क्रम चलता रहेगा।......

-- कैलाश बिहारी, रायबरेली

★ हमारे लिये सारी दुनिया एक है दोस्तो
सामने देखो समस्यायें अनेक हैं दोस्तो।

– जगदीश, जीन्द

नहीं दी तनखा

चाँद इन्डस्ट्रीज, 7 बी/1 एन.एच., में तनखा 7 तारीख को बना कर हस्ताक्षर स्वयं कर लेते हैं पर देते हैं 28 तारीख को – नवम्बर का वेतन 16 दिसम्बर तक नहीं; **सिकन्द लिमिटेड,** 61 इन्ड. एरिया, में अक्टूबर की तनखा 4 दिसम्बर को दी, नवम्बर का वेतन 16 दिसम्बर तक नहीं; **क्लच आटो,** 12/4 मथुरा रोड, में अरबों के चक्कर में करोड़ों की दलाली दी और तनखा में देरी जारी है – नवम्बर का वेतन 12 दिसम्बर को देना शुरू किया, 17 दिसम्बर तक आधे मजदूरों को भी नहीं; **कन्डोर पावर,** 22सै-4, में अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें 20 दिसम्बर तक नहीं; **वीके सर्जीकल्स,** सोहना रोड, में अक्टूबर की तनखा 17 नवम्बर को दी, नवम्बर का वेतन 10 दिसम्बर तक नहीं; **ब्रॉन लैब,** 13 इन्ड. एरिया, में नवम्बर की तनखा 14 दिसम्बर तक नहीं; **शिवालिक ग्लोबल,** 12/6 मथुरा रोड, में अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें 17 दिसम्बर तक नहीं; **नूकेम लिमिटेड,** 54 इन्ड. एरिया, में नवम्बर का वेतन 16 दिसम्बर तक नहीं;....

दिल्ली ...(पेज चार का शेष)

फैक्ट्रियों में निकालते और नई भर्ती करते रहते हैं। सितम्बर में अचानक 180 महिला मजदूरों को निकाल दिया था। नवम्बर में एफ-23/3 फैक्ट्री से फिनिशिंग विभाग के उन 11 मजदूरों को निकाल दिया जिन्हें लगातार काम करते 10 महीने हो गये थे। ओरियन्ट क्राफ्ट फैक्ट्रियों में पानी-पेशाब पर रोक और गाली आम बात है।"

जे.एस. ट्रेडिंग वरकर : "ओखला फेज-3 में मोदी मिल के पास फ्लैटेड फैक्ट्रियों में स्थित इस फैक्ट्री में 11 घण्टे रोज ड्युटी पर हैल्पर को महीने के 1400 रुपये देते हैं। ई. एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। आये दिन चोट लगती रहती है।"

खलासीः "दिल्ली में ट्रक पर हैल्पर की तनखा 1000 रुपये है और 50 रुपये प्रतिदिन भोजन के लिये। नहाने-खाने-सोने का कोई समय नहीं है और हम से रे-बे कर बोलने का रिवाज है।"

ट्रक ड्राइवर : "आगरा से माल लाद कर दिल्ली आते समय 12 दिसम्बर को सुबह 4 बजे उत्तर प्रदेश पुलिस ने कोसी बार्डर पर गाडी रुकवाई और पैसे माँगे। 'किसलिये?' की बात पर पुलिसवाले ने थप्पड़ मारा और बोला कि हम तेरे लिये यहाँ खड़े हैं और तू 10 रुपये भी नहीं दे सकता। मैंने गाड़ी टेढी कर खड़ी कर दी – लफड़ा हो गया है समझ कर ड्राइवर इक्ट्ठे हो गये। जाम लग गया। थप्पड़ मारने वाला पुलिसवाला गायब हो गया और हालात सम्भालने पुलिस अफसर पहुँचा। छोटे साहब ने कहा कि यह पैसा हमारे घर ही नहीं जाता, यहाँ से गुजरते प्रत्येक ट्रक पर 10 से 50 रुपये वसूलने का आदेश बड़े साहबों का है।"

हिन्डोप्लास्ट मजदूर : "प्लॉट सी-112 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1600 रुपये है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

सामान्य है यह सब

एस. पी.एल. इन्डस्ट्रीज मजदूर : "कम्पनी की प्लॉट 21-22 व 47-48 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्रियों में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों से प्रतिदिन 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में महीने के तीसों दिन काम करवाते हैं – साप्ताहिक छुट्टी नहीं, कोई छुट्टी नहीं। हैल्पर को 12 घण्टे के 80-85 रुपये और ऑपरेटर को 105। ई.एस.आई. कार्ड देने के नाम पर साल में एक बार फोटो लेते हैं – कितनी ही बार फोटो ले लिये हैं पर ई.एस.आई. कार्ड कभी नहीं दिया। पी.एफ. नहीं, बोनस नहीं, निर्धारित समय पर वेतन नहीं – नवम्बर की तनखा आज 15 दिसम्बर तक नहीं दी है।"

मैटल फार्मर्स वरकर : "प्लॉट 61 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूरों की तनखा 1200 रुपये, पुरुष हैल्परों की 1400 और ऑपरेटरों की 2000-2200 रुपये है। फैक्ट्री में 12 घण्टे की एक शिफ्ट है – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। काम करते 50 मजदूरों में से 10-15 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ.। साहब की गाली और थप्पड़ भी हैं फैक्ट्री में।"

अकीबो स्प्रिंग्स मजदूर : "प्लॉट 153 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में इधर चौथी बार ले ऑफ लगाई है – 5 से 18 दिसम्बर तक। अक्टूबर माह के 15 दिन का वेतन कम्पनी ने हमें 6 दिसम्बर को जा कर दिया – अक्टूबर की आधी तथा नवम्बर की पूरी तनखा आज 16 दिसम्बर तक नहीं दी हैं। श्रम विभाग में हमारे द्वारा शिकायत करने पर कम्पनी ने लिख कर दिया है किं आगे से ले ऑफ नहीं लगायेगी तथा बकाया वेतन 22 दिसम्बर तक दे देगी।"

इन्डीकेशन इन्सट्रुमेन्ट्स वरकर : "प्लॉट 19 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हम मजदूरों ने लीडरों से साफ-साफ कह दिया था कि उत्पादन बढाने वाला दीर्घकालीन समझौता मत करना बेशक कम्पनी पैसे न बढाये। लेकिन फिर भी यूनियन ने मैनेजमेन्ट के साथ बीस प्रतिशत उत्पादन बढाने वाला तीन वर्षीय एग्रीमेन्ट कर लिया। इस से काम का बोझ इतना बढ गया है कि मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते में निर्धारित उत्पादन को पूरा करने के लिये कुछ मजदूरों को तो भोजन अवकाश के समय भी काम करना पड़ रहा है..... और, एग्रीमेन्ट की पहली किस्त कम्पनी ने नहीं दी है।"

8 घण्टे की ड्युटी और साप्ताहिक छुट्टी पर दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा हैल्पर के लिये 3166 रुपये और कारीगर के लिये 3590 रुपये महीना है। *हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर-हैल्पर के लिये जुलाई 05 से 2360 रुपये है।*

राजू इंजिनियरिंग वरकर : "प्लॉट 22 ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1500 रुपये। फैक्ट्री में 12½ घण्टे की एक शिफ्ट है – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

माइक्रो मशीन्स मजदूर : "प्लॉट 103 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1800 रुपये। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। काम करते 50 मजदूरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी की नहीं।"

सुरभि इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 318 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कोई ठेकेदार नजर नहीं आता पर ठेकेदार के जरिये रखे बताये जाते वरकरों में हैल्पर की तनखा 1500 रुपये और ऑपरेटर की 2372 रुपये – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

इंडियन हार्डवेयर इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 66 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हस्ताक्षर 3200-3500 रुपये तनखा पर करवाते हैं पर देते 1800 रुपये हैं। फैक्ट्री में 70 मजदूर काम करते हैं – ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। छह महीने बाद नौकरी से निकाल देते हैं।"

श्याम टैक्स इन्टरनेशनल वरकर : "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को अक्टूबर की तनखा पहली दिसम्बर को जा कर दी। नवम्बर का वेतन आज 20 दिसम्बर तक नहीं दिया है। फैक्ट्री में 10 ठेकेदार हैं – हैल्पर को 12 घण्टे रोज काम पर 30 दिन के 2400 रुपये देते हैं, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती मजदूरों को तनखा 10 तारीख को और ओवर टाइम के पैसे 22 तारीख को दे दिये जाते हैं परन्तु तनखा 1642 रुपये है और यह वरकर भी रोज 12 घण्टे काम करते हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

जगसनपाल फॉर्मास्युटिकल्स वरकर : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में कम्पनी तीन वर्ष से डी.ए. के पैसे नहीं दे रही – महँगाई आँकड़ों अनुसार 6 महीने पर वेतन में डी.ए. राशि जोड़ने की अधिसूचनायें सरकार बेशक जारी करती रही है।"

सेन्डेन विकास

सेन्डेन विकास मजदूर : "प्लॉट 65 सैक्टर-27ए स्थित फैक्ट्री में रोज सुबह 10½ बजे मन खराब हो जाता है। स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर असेम्बली लाइन पर बराबर में लगते हैं, मशीनों पर अगल-बगल में काम करते हैं, ब्रेजिंग में संग-संग हैं परन्तु सुबह 10½ बजे स्थाई मजदूरों को चाय के संग कचोड़ी/समोसे दिये जाते हैं और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को सिर्फ चाय – बहुत दुखता है यह स्थाई मजदूरों को भी। कैन्टीन में स्थाई मजदूरों और स्टाफ के लोगों को भोजन एक रुपये में और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को दस रुपये में। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की तनखा स्थाई मजदूरों की तनखा के तीसरे से छठवें हिस्से के बराबर है.... कम्पनी के दो बड़े साहबों में एक भारत सरकार का नागरिक है और दूसरा जापान सरकार का नागरिक है।

"कारों के (बसों-ट्रकों के भी) एयरकन्डीशनर बनाती सेन्डेन विकास में 75-80 स्थाई मजदूर, 30-35 ट्रेनी, 125-150 स्टाफ वाले और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 75-150 वरकर काम करते हैं। 1985 में शुरू हुई कम्पनी ने 1995 से मजदूरों को परमानेन्ट करना बन्द कर रखा है..... इधर प्लास्टिक मोल्डिंग की नई बड़ी मशीन चलाने वाले 6 लोगों को कम्पनी स्टाफ कहती है।

"फैक्ट्री में काम का बोझ लगातार बढाया जा रहा है – 1985 में 1000 एयरकन्डीशनर प्रतिमाह, अब 15,000 प्रतिमाह। खींचातान से ही अब उत्पादन पूरा कर पाते हैं। सब स्थाई मजदूरों की आयु अब 30 वर्ष से अधिक हो गई है – ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों में ज्यादा उम्र वालों को कम्पनी रखती ही नहीं, 25 वर्ष से कम आयु वाले ही रखती है (वैसे अभी उत्पादन में 18 वर्ष से कम आयु वाले भी लगा रखे हैं)।

"सेन्डेन विकास फैक्ट्री में आमतौर पर पूरे साल ओवर टाइम लगता है। महीने में 60-70 घण्टे तो ओवर टाइम के हो ही जाते हैं। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगनी दर से किया जाता है पर वेतन का आधे से ज्यादा हिस्सा भत्ते हैं और ओवर टाइम बेसिक व डी.ए. पर ही दिया जाता है इसलिये यह वास्तव में सिंगल रेट से भी कम पड़ता है। जिन्हें स्टाफ कहते हैं उन्हें कम्पनी 40 घण्टे प्रतिमाह से ज्यादा ओवर टाइम का भुगतान करती ही नहीं। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को प्रतिमाह 70-80 घण्टे ओवर टाइम करना पड़ता है और उसके पैसे सिंगल रेट से दिये जाते हैं।

"आजकल सबसे बड़ी समस्या नौकरी के डर की हो गई है। हालात को देखते हुये सेन्डेन विकास में स्थाई मजदूरों की तनखा अच्छी है..... स्थाई मजदूरों को और दबाने के लिए कम्पनी 8 से 18% वार्षिक वेतन वृद्धि मनमर्जी से करती है। ऐसे में 20-30% स्थाई मजदूर चमचागिरी की राह पर.....

"कदम-कदम पर दुभान्त करती, भेदभाव बरतती सेन्डेन विकास कम्पनी ओवर टाइम के समय स्थाई मजदूरों को भी इसकी चपेट में लेती है – साँय 5½ से रात 9½ तक ओवर टाइम के दौरान 7½ बजे कम्पनी स्टाफ वालों को चाय के साथ कुछ खाने को देती है पर स्थाई मजदूरों (और ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों) को सिर्फ चाय देती है। लगता नहीं है कि कम्पनी को पैसे की कमी है – फैक्ट्री में पूरे फर्श पर पेन्ट करवा रखा है।

"सेन्डेन विकास फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट के अवसर बहुत कम हैं। शीट मैटल का सब काम कम्पनी बाहर ही करवाती है। कम्प्रेसर सब जापान से आते हैं – यहाँ उन पर कोर, क्लच, रोटर लगाते हैं। होज बाहर से आता है, हम काट कर जोड़ते हैं। गेले, केनमोर, प्रणव विकास सहायक कम्पनियाँ हैं।"

दिल्ली से-

सुपरएक्स मजदूर : " प्लॉट एफ-89/28 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्पर की तनखा 1600 रुपये और कारीगर की 3100 रुपये है। फैक्ट्री में काम करते 80 मजदूरों में से 60 की ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं। निर्यात के लिये सॉकेट, स्प्रिंग बनाने वाला लोहे का भारी काम है – चोट लगने पर दस-बीस रुपये इलाज के नाम पर दे देते हैं।"

सेक्युरिटी गार्ड : " बी-162 जवाहर पार्क देवली खानपुर कार्यालय वाली **आई.एस.जी.एस. सेक्युरिटी सर्विसेज** 12 घण्टे रोज ड्युटी पर गार्ड को महीने के 2500 से 3200 रुपये देती है। कम्पनी के 100 गार्डों में से 30-35 की ही ई. एस.आई. व पी.एफ. हैं। सुपरवाइजर गाली देता है। महीने में दो-तीन दिहाड़ी काट लेते हैं और नुक्स निकाल कर जब चाहें तब नौकरी से निकाल देते हैं।"

मार्च 05 से कम्पनी द्वारा काम देना बन्द कर फैक्ट्री में खाली बैठाना, मई 05 में नई फैक्ट्री खोल वहाँ वही काम करवाना, सितम्बर 05 से वेतन नहीं देना.... स्थाई मजदूरों को निकाल कर कैजुअल वरकर रखने, ठेकेदारों के जरिये वरकर रखने के सामान्य सिलसिले को रोकने के लिये, अपनी नौकरी बचाने के लिये 27 अक्टूबर 05 से बी- 156 डी.डी. ए. शेड्स, ओखला फेज- 1 स्थित ***माइकल आराम एक्सपोर्ट*** *फैक्ट्री के मजदूरों ने गत्तों पर अपनी बातें लिख कर ओखला औद्योगिक क्षेत्र में अन्य मजदूरों के बीच जाना, दिल्ली में लोगों के बीच खड़ा होना आरम्भ किया था। नवम्बर के पश्चात दिसम्बर माह में भी गत्ते थामे मजदूर दिल्ली में जगह- जगह खड़े हुये हैं, मैनेजमेन्ट पर दबाव बढा है। अमरीका पहुँची इन गत्तों की गमक- धमक दिसम्बर में वहाँ बढी है – अमरीका स्थित माइकल आराम समूह की कम्पनी पर और वहाँ कम्पनी का माल बेचने वालों पर दबाव बढा है।*

ओरियन्ट क्राफ्ट मजदूर : "कम्पनी की बी-14, बी-15, बी-16 व एफ-23/3 ओखला फेज-1 स्थित **(बाकी पेज दो पर)**

विचारणीय ई.एस.आई. द्वारा लूट

हकीकत की एक झलक

अपने नित्य के कार्यों के दौरान फैक्ट्रियों में मजदूरों को बीमार करती, मजदूरों के अंग भंग करती, मजदूरों की हत्या करती कम्पनियों को इन सब की जिम्मेदारी से मुक्त करने के लिये भारत सरकार ने ई. एस.आई. कारपोरेशन (कर्मचारी राज्य बीमा निगम) का गठन किया। अन्य सरकारी क्रियाकलापों की ही तरह ई.एस.आई. को भी मजदूरों के हित में, मजदूरों के लिये सुविधा के तौर पर प्रचारित- प्रसारित किया जाता है। और, कानून अनुसार भारी शोषण (100 का काम करवा कर बदले में 2 देना) से तृप्ति विरला ही है। कानून से परे शोषण भी सामान्य है। कारखानों के शहर फरीदाबाद में 25 वर्ष के अनुभवों के आधार पर कह सकते हैं कि जिन मजदूरों पर नियम अनुसार ई. एस.आई. प्रावधान लागू होने चाहियें उनमें एक चौथाई से कम पर यह लागू हैं तथा ई.एस.आई. कानून का उल्लंघन लगातार बढ रहा है।

फैक्ट्री में काम करते मजदूरों को दस्तावेजों में दिखाना ही नहीं। मजदूरों के वेतन में से ई.एस.आई. के नाम से पैसे काट लेना पर उन्हें (व कम्पनी द्वारा देय हिस्से को) ई.एस.आई. कारपोरेशन में जमा करवाना ही नहीं। हाथ कटने पर निजी चिकित्सालय में उपचार के बाद नौकरी पर नहीं रखना। फैक्ट्री में मृत्यु पर पुलिस- प्रशासन- नेताओं को पूज कर और परिवार को कुछ पैसे दे कर मामला रफा- दफा करना। कार्य के दौरान अंग भंग/मृत्यु पर जिम्मेदारी से मुक्ति के लिये सुविधा- शुल्क दे कर पीछे की तारीख से ई.एस.आई. लागू करवाना। कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे जा रहे वरकरों की बढती सँख्या का जो थोड़ा- सा हिस्सा ई.एस.आई. दस्तावेजों में दिखाया जा रहा है उसकी कच्ची पर्ची (टी आई सी) बना कर ई.एस.आई. कारपोरेशन कम्पनियों को देता है – आमतौर पर मैनेजमेन्टें इन कच्ची पर्चियों को सम्बन्धित मजदूरों को नहीं देती इसलिये वे मजदूर भी सामान्यतः ई.एस.आई. डिस्पैन्सरी/अस्पताल से इलाज नहीं करवा सकते।

अन्य सरकारी विभागों की ही तरह ई.एस.आई. में भी नियम निर्धारित कार्य के लिये पंक्ति- दर- पंक्ति में लगना, अधिकारी- कर्मचारी की लापरवाही- बेरुखी झेलना और रिश्वत सामान्य हैं। पर्ची बनवाने, डॉक्टर को दिखाने, दवाई लेने, पट्टी करवाने, ऑपरेशन के लिये लाइनों में लगो और बेरुखी झेलो..... छुट्टी के लिये पैसे दो, ऑपरेशन के लिये पैसे दो, साँस की तकलीफों- टूटी हड्डी पर प्लास्टर- ...... के लिये पैसे दो, बाहर से ली दवाई के बिल के भुगतान के लिये पैसे. .... जीवन- भर असर डालने वाली गम्भीर चोट पर मुआवजा- पेन्शन राशि के लिये पैसे दो। ऐसे में ई. एस.आई. कार्ड वाले मजदूरों की बड़ी सँख्या भी सामान्यतः निजी चिकित्सकों से उपचार करवाती है।

अन्य सरकारी विभागों की ही तरह ई.एस.आई. में भी नियम निर्धारित सँख्या से भी काफी कम कर्मचारी हैं – फरीदाबाद में तो आधे से भी कम। ई.एस.आई. कारपोरेशन के नियमों का पालन किया जाये तो कार्य हो ही नहीं सकता – इसीलिये बिजली विभाग हो अथवा रेलवे, किसी विभाग के कर्मचारी जब नियमानुसार कार्य करने लगते हैं तब सरकार उसे कर्मचारियों का असहयोग करार दे कर सख्त कार्रवाई की धमकी देती है। ई.एस.आई. में भी डॉक्टरों और अन्य कर्मचारियों पर कार्य के अत्याधिक बोझ को भ्रष्टाचार- लापरवाही ढक देते हैं, छिपा देते हैं।

अन्य सरकारी विभागों की ही तरह ई.एस.आई. में भी पैसे की कमी को हर समस्या का कारण करार देने का चलन रहा है। ई.एस.आई. डिस्पैन्सरियों- अस्पतालों की कमी/खस्ता हालत, स्टाफ की कमी, औजारों- दवाइयों का अभाव, जनरेटर नहीं- ऑपरेशन कमरे का एयरकन्डीशनर खराब- बीमारों के लिये पीने के पानी का प्रबन्ध नहीं, सुस्ताने के लिये स्थान- साधन नहीं.... पैसे की कमी है। आइये ई.एस.आई. कारपोरेशन द्वारा स्वयं प्रदत आँकड़ों पर एक नजर डालें :

अप्रैल 04- मार्च 05 के दौरान हरियाणा क्षेत्र से ई. एस.आई. को 94 करोड़ 65 लाख रुपये की आमदनी हुई और इस दौरान यहाँ 43 करोड़ 61 लाख रुपये खर्च किये गये। एक वर्ष में ई.एस.आई. कारपोरेशन ने हरियाणा क्षेत्र से 51 करोड़ 4 लाख रुपये कमाये। व्यापक भ्रष्टाचार और अपव्यय के संग कमाई.... हरियाणा क्षेत्र से एक वर्ष में 94 करोड़ 65 लाख एकत्र करना, 43 करोड़ 61 लाख खर्च करना और 51 करोड़ 4 लाख रुपये लाभ को ई.एस.आई. द्वारा मजदूरों की सेवा के नाम पर लूट ही कहा जा सकता है।

ई.एस.आई. कारपोरेशन द्वारा प्रदत आँकड़े हरियाणा क्षेत्र में 37 स्थानों पर 4 लाख 75 हजार 850 मजदूरों को ई.एस.आई. के दायरे में दर्शाते हैं.....जबकि अकेले फरीदाबाद में ही कानून अनुसार इतने मजदूरों की ई. एस.आई. होनी चाहिये। विधान प्रदत अधिकार से चौथाई से भी कम राशि एकत्र करती ई.एस.आई. इस आमदनी का भी आधे से कम खर्च करती है – पूरे हरियाणा में ई.एस.आई. के सिर्फ 5 अस्पताल हैं (2 फरीदाबाद में), सम्पूर्ण हरियाणा में ई.एस.आई. की मात्र 13 एम्बुलेन्स हैं, 57 डिस्पैन्सरियों में से 42 किराये की इमारतों में हैं, 19 शाखा कार्यालयों में से 10 किराये के मकानों में.... इस वास्तविकता के दृष्टिगत मोटी कमाई के लिये बड़े खिलाड़ियों ने कुछ वर्ष पूर्व ई.एस. आई. कारपोरेशन को भंग करवाने का खेल शुरू किया था पर कारगिल- वारगिल ने शायद बात सिरे नहीं चढ़ने दी। इधर ई.एस.आई. के भारी लाभ (और कई गुण सम्भावित) में हिस्सा- पत्ती के लिये बड़े खिलाड़ी नये सिरे से दस्तक दे रहे हैं।

भ्रष्टाचार और अपव्यय ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के संचालन के लिये आमतौर पर और मण्डी- मुद्रा के दबदबे वाली व्यवस्था की क्रियाशीलता के लिये खासकरके अनिवार्य आवश्यकतायें हैं – मालिकों को कम्पनियों द्वारा दफना दिये जाने के बाद से इस सन्दर्भ में सरकारी क्षेत्र और तथाकथित निजी क्षेत्र में कोई फर्क नहीं रहा है। आज नादान अथवा पाखण्डी लोग ही भ्रष्टाचार और अपव्यय पर विलाप करते हैं – बीमारी के लक्षणों पर छाती पीटते हैं। लक्षणों का उपचार नहीं होता और रोग के निदान के वास्ते नई समाज रचना के लिये विचार- व्यवहार प्राथमिक गतिविधियाँ हैं। ■ ■ ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।